In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

शेख फरीद

टीकाकार

वियोगी हरि

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हि: ४८६

सत्साहित्य-प्रकाशन

शेख़ फरीद

–सूफी संत का परिचय और बानी–

वियोगी हरि

19365

पुस्तक भेंट के निमित्त है

१९५९

सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल,
नई दिल्ली

पहली बार : १९५९
मूल्य
पैंतीस नये पैसे

मुद्रक
उद्योगशाला प्रेस,
दिल्ली–६

lepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

प्रकाशकीय

इस पुस्तक में सूफ़ी संत शेख़ फरीद का परिचय और उनकी 'बानी' दी गई है। सामान्य शिक्षित पाठक भी उनके विचारों को भली प्रकार समझ सकें, इसलिए 'बानियों' के सरल अर्थ भी साथ में दे दिये गये हैं। यद्यपि शेख़ फरीद लगभग चारसौ वर्ष पहले हुए थे, तथापि उनके पद आजभी बहुत ही ताजे लगते हैं।

संत जन देश और काल की सीमा से परे होते हैं। वे किसीभी देश में पैदा हों, उनके उपदेश सभी के लिए होते हैं। वे किसीभी काल में पैदा हों, उनकी शिक्षाएं कभी बासी नहीं होतीं। पाठक देखेंगे कि शेख़ फरीद ने जो कुछ लिखा है, वह आजभी कितना सजीव और कितना स्फूर्त्तिदायक है।

यह सामग्री 'संत-सुधा-सार' तथा उसके संक्षिप्त संस्करण में प्रकाशित हो चुकी है; लेकिन बहुत-से ऐसे पाठक होंगे, जो शायद पूरे ग्रंथ को खरीदने में असमर्थ हों। उनकी सुविधा के लिए इसे अलग से छापा जा रहा है और इसका मूल्य बहुत ही कम रक्खा गया है।

आशा है, इस अल्प मूल्य की, किंतु अत्यंत उपयोगी, पुस्तक का व्यापक प्रचार और प्रसार होगा।

—मंत्री

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

lepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

: १ :

शेख़ फ़रीद : परिचय

सोलहवीं सदी के महान् सूफ़ी संत शेख़ फरीद का जन्म-काल अनिश्चित है। इनके पिता का नाम ख्वाजा शेख़ मुहम्मद था, जो अजोधन (पाकपट्टन) में रहते थे। शेख़ फरीद गृहस्थ थे। मगर रहनी इनकी एक ऊँचे फकीर की जैसी थी।

असल नाम इनका शेख़ बिरहम या इब्राहीम था। पाकपट्टन के आदि फ़रीद हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन मसऊद शकरगंज के यह वंशधर थे। फ़रीद इनकी उपाधि थी। इन्हें फ़रीद सानी याने फ़रीद द्वितीय भी कहते हैं। शेख़ बिरहम कलां, वलराजा, शेख़ बिरहम साहब और शाह बिरहम इन नामों से भी यह प्रसिद्ध हैं।

आदि फ़रीद याने हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन ईसा की तेरहवीं सदी में विद्यमान थे। यह बहुत बड़े पहुँचे हुए सूफी फ़कीर थे। दिल्ली के सुप्रसिद्ध हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया भी इनको अपना गुरु मानते थे। हज़रत निज़ामुद्दीन ने इनकी प्रशंसा में एक बार यहाँतक कहा था —

"मेरे पीर पवित्रात्मा मौलाना फ़रीद हैं;
उनके समान परमेश्वर ने इस लोक में दूसरा नहीं सिरजा।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

यह द्वितीय फ़रीद या शेख़ बिरहम आदि फ़रीद की ११वीं पीढ़ी में आते हैं। बाबा नानक के साथ इन्हींका सत्संग हुआ था। 'गुरु ग्रंथ साहिब' में इन्हीं फ़रीद के २ पदों और १३० सलोकों का संग्रह मिलता है।

आदि फ़रीद की तरह यह भी एक ऊँची गति के महात्मा थे। इनके अनेक चमत्कारों की भी कथाएँ प्रसिद्ध हैं। एक कथा है कि एक रात को एक चोर इनके घर में चोरी करने आया और वह अंधा हो गया। सवेरा होते ही उसने शेख़ साहब से माफ़ी माँगी और प्रतिज्ञा की कि आगे वह कभी ऐसा बुरा काम नहीं करेगा। शेख़ बिरहम ने उसके लिए परमेश्वर से प्रार्थना की और उस चोर को फिर से दृष्टि मिल गई।

बाबा नानक दो बार अजोधन में जाकर इनसे मिले थे। इन दोनों महात्माओं का सत्संग प्रसिद्ध है। उस सत्संग में शेख फ़रीद ने कई आध्यात्मिक प्रश्न किये थे और बाबा नानक ने उन्हें उनके समुचित उत्तर दिये थे।

कहते हैं कि शेख़ बिरहम के दो पुत्र भी थे—शेख़ ताजुद्दीन महमूद और शेख़ मुनव्वरशाह शहीद। शेख़ ताजुद्दीन भी एक ऊँचे संत थे। शेख़ बिरहम के कई शागिर्द थे, जिनमें शेख़ सलीम चिश्ती फतेहपुरी बहुत प्रख्यात थे।

शेख बिरहम की मृत्यु २१ रजब, ९६० हिजरी सन् में हुई। ४२ बरसतक इन्होंने प्रेम और परमार्थ की अनमोल दौलत को दोनों हाथों से लुटाया, और खूब लुटाया।

शेख़ फ़रीद की बानी बहुत रसभरी, खूब गहरी और मरम पर सीधे चोट करनेवाली है। उनके कई सलोकों के अंदर गहरा आध्यात्मिक रहस्य भरा हुआ है और उन्हींमें उसके खोलने की कुंजी भी है। स्वरूप का साक्षात्कार करने के बाद ही इस आध्यात्मिक गहराई और ऊँचाईतक पहुँचा जा सकता है। निर्मल वैराग्य की भी लहरें शेख़ फ़रीद ने ऊँची-से-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

ऊँची उठाई हैं। इनका एक-एक शब्द अनूठा है। शेख़ फरीद की प्रेम-प्रीति की मीठी बानी में सूफी-रंग बहुत निखरा हुआ पाया जाता है।

भाषा पंजाबी-हिंदी है और बहुत मोठी और रसीली। कहने का ढंग ऐसा, मानों कूजे में समुंदर भर दिया हो। फ़रीद की बानी जब पढ़ते हैं और सुनते हैं, तो तबीयत हक़ीक़ी मस्ती में झूमने लगती है।

फ़रीद की अनूठी रसभरी बानी में से, जो हमने 'गुरु ग्रन्थ साहिब' में से ली है, यहाँ हम दो सबद और अट्ठावन सलोक अर्थ के साथ, दे रहे हैं।

—वियोगी हरि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

: २ :

बानी

रागु आसा

बोलै सेख फरीदु पिआरे अलह लगे ।
इहु तनु होसी खाक निमाणी गोर घरे ॥
आजु मिलावा सेख फरीद टाकिम ।
कूंचड़ीआ मनहु मचिंदड़ीआ ॥
जे जाणा मरि जाईऐ घुमि न आईए ।
झूठी दुनिया लगि न आपु वञाईए ॥
बोलीए सचु धरमु न झूठु बोलीए ।
जो गुरु दसै वाट मरीदा जोलीए ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

छैल लंघदे पारि गोरी मनु धीरिश्रा ।
कंचन वंने पासे कलवति चीरिश्रा ।।

सेख हैयाती जगि न कोई थिरु रहिश्रा ।
जिसु श्रासणि हम बैठे केते बैसि गइश्रा ।
कतिक कूंजां चेति डउ सावणि बिजुलीश्रां ।
सीश्राले सोहंदीश्रां पिर गलि वाहड़ीश्रां ।।

चले चलणहार विचारा लेई मनो ।
गंढ़ेदिश्रां छिश्र माह तुड़ंदिश्रा हिकु खिनो ।।
जिमी पुछै श्रसमान फरीदा खेवट किंनि गए ।
जालण गोरा नालि उलामे जीश्र सहे ।।१।।

शेख़ फरीद कहता है—मेरे प्यारे मित्रो, श्रल्लाह से जोड़ लो श्रपनी प्रीति। यह शरीर तो खाक हो जायगा, श्रौर इसका घर निगोड़ी कब्र में जा बनेगा। श्राज भी उस प्रीतम से मिलन हो सकता है, शेख़ फ़रीद, यदि तू उन भावनाश्रों को काबू में करले, जो तेरे मन को बेचैन कर रही हैं।

यदि यह पता होता कि मुझे मरना ही होगा, श्रौर फिर यहाँ लौटना न होगा,

तो इस झूठी दुनिया से प्रीति जोड़कर मैं श्रपने-श्रापको बर्बाद न कर बैठता।

तू धरम से सच बोल, झूठ न बोल।

जो रास्ता गुरु दिखादे, उसीपर चलना चाहिए शागिर्द को।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

प्रेमी के रास्ता पार कर लेने पर प्रियतमा को हिम्मत बँध जाती है।

('छैल' या 'प्रेमी' से मतलब यहाँ साधक से है, और 'गोरी' प्रियतमा से आशय है लक्ष्य-सिद्धि करनेवाले योगी से।)

तू करौत से चीर दिया जायगा, यदि कंचन की ओर लुभायेगा।

अय शेख़, इस दुनिया में कोई भी हमेशा रहनेवाला नहीं;

जिस पीढ़े पर हम बैठे हुए हैं, उसपर कितने बैठ चुके हैं!

जैसे कुलंग कातिक में आते हैं, चैत में दावानल देखने में आता है, और सावन में बिजलियाँ कौंधती दिखाई देती हैं,

और जाड़ों में जैसे कामिनी अपने प्रियतम के गले में बाहें डाल लेती है,

ऐसे ही सब (क्षणभर को) आते और फिर चल देते हैं, इस (सत्य) पर तू अपने मन में विचार कर।

मनुष्य के गढ़े जाने में तो लगते हैं छह मास, पर टूट जाता है वह एक क्षण में।

(अर्थात्, गर्भ में मनुष्य की आकृति छह महीने में बनती है।)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

ज़मीन ने आसमान से पूछा—फरीद कहता है—कितने खेनेवाले, पार लगानेवाले (धार्मिक मार्ग-दर्शक) चले गये !

कुछ तो जल-बलकर खाक हो गये, और कुछ क़ब्रों में पड़े हुए हैं और उनकी रूहें झिड़कियाँ झेल रही हैं।

राग सूही

तपि तपि लुहि लुहि हाथ मरोरउँ,
बावलि होइ सो सहु लोरउँ।

तैं सहि मन महि कीआ रोसु,
मुझु अवगुन सह नाही दोसु।

तैं साहिब की मैं सार न जानी,
जोबनु खोइ पीछे पछतानी।

काली कोइल तू कित गुन काली,
अपने प्रीतम के हउ विरहै जाली।

पिरहि बिहून कतहि सुखु पाए,
जा होइ कृपालु ता प्रभू मिलाए।

विधण खूही मुंध अकेली,
ना कोइ साथी ना कोइ बेली।

वाट हमारी खरी उडीणी,
खंनिअहु तिखी बहुतु पिईणी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

उसु ऊपरि है मारगु मेरा,
सेख फरीदा पंथु सम्हारि सवेरा ।।२।।

विरह-ज्वर से मेरा अंग-अंग जल रहा है, और मैं अपने हाथों को मरोड़ती हूँ,

प्रीतम से मिलने की लालसा ने मुझे बावली बना दिया है।

प्यारे, तू अपने मन में मुझसे रूठ गया था,
सो इसमें मेरा ही दोष था, प्यारे, तेरा नहीं।

मेरे स्वामी, मैंने तेरे गुणों को पहचाना नहीं ;
मैंने अपना जोबन गँवा दिया और पीछे बहुत पछताई—
री काली कोयल, तू किस कारण काली हुई ?
'अपने प्रीतम के विरह में जल-भुनकर,'

अपने प्यारे से विलग होकर क्या किसीको कभी सुख मिला ?

उस प्रभु से मिलना उसकी कृपा से ही बन सकता है।

कुआँ यह बहुत दुखदाई है, और वह बेचारी अकेली उसमें जा पड़ी है ;

(कुआँ अर्थात् संसार; अकेली स्त्री अर्थात् जीवात्मा ।)
न उसकी वहाँ कोई सहेली है, न कोई वेली,
मेरी बड़ी ही विकट बाट है;
दोधारी तलवार से भी तेज और बहुत पैनी;
उसपर मुझे चलना है;

lepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

शेख फरीद, तैयार होजा मार्ग पर चलने को—अभी समय है।

सलोक

जितु दिहाड़ै धनवरी साहे लए लिखाइ।
मलकु जिकंनी सुणीदा मुहु देखाले आइ॥
जिंदु निमाणी कढीऐ हडा कूं कड़काइ।
साहे लिखे न चलनी जिंदू कूं समझाइ॥
जिंदु बहूटी मरणु वरु लैंजासी परणाइ।
आपण हथी जोलिकै कै गलि लगै धाइ॥
वालह निकी पुरसलात कंनी न सुणीआइ।
फरीदा किडी पवंदई खड़ा न आपु मुहाइ॥१॥

वह दिन पहले ही लिख दिया गया था, जिस दिन कि धनवंती का ब्याह होना था।

जिस दूलह के बारे में सुन रखा था वह अपना मुखड़ा दिखाने आ पहुँचा है। हाड़ों को कड़काकर वह उस बेचारी धनवंती को खींचकर अपने साथ ले जायगा।

अपनी जीवात्मा को तू समझादे कि जो घड़ी नियत हो चुकी उसे बदला नहीं जा सकता।

जीवात्मा दुलहिन है, और मृत्यु है दूलह; वह उसे ब्याहकर अपने साथ ले जायगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

बिदा होते समय, वह बेचारी किसके गले में अपनी बाहें डालेगी ?

क्या तुमने सुना नहीं कि वह दुलहिन बाल से भी कहीं अधिक सूक्ष्म है।

फ़रीद, जब तेरा बुलावा आये, उठकर खड़ा हो जाना और अपने-आपको धोखा न देना।

किझु न बुझै किझु न सुझै दुनीआ गुझी भाहि।
साईं मेरैं चंगा कीता नाही त हंभी दझां आहि ॥२॥

मैं न कुछ जानता हूँ, न कुछ देखता हूँ—दुनिया यह गोया धधकती हुई आग है;

मेरे साईं ने अच्छा किया कि मुझे चेता दिया, नहीं तो मैं भी इसमें जलबल गया होता।

फरीदा जे तू अकलि लतीफ काले लिखु न लेखु।
आपनड़े गिरीवान महि सिरु नीवां करि देखु ॥३॥

फ़रीद, अगर तू तेज अक्ल रखता है, तो (दूसरों के खिलाफ़) काले अंक मत लिख।

अपना सिर झुकाकर तू तो अपने ही गरीबा की तरफ देख।

(मतलब यह कि दूसरों के दोष मत देख; तू तो अपने दिल को देख कि उसमें कितने क्या दोष भरे पड़े हैं।)

फरीदा जो तैं मारनि मुकीआं तिन्हा न मारे घुंमि।
आपनड़े घरि जाईए पैर तिन्हादे चुंमि ॥४॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

फ़रीद, अगर लोग तुझे मुक्कों से मारें, तो बदले में तू उन्हें मत मार; तू तो उनके क़दमों को चूमकर अपने घर चला जा।

फरीदा जां तउ घटण वेल तां तू रता दुनी सिउ।
मरग सवाई नीहि जां भरिआ तां लदिआ ॥५॥

फ़रीद, जब तेरे कमाने के दिन थे, तब तो तू दुनिया के रंग में रँगा हुआ था।

मौत की नींव मजबूत है; खेप के भरते ही वह लादनहार लेकर चल देगा।

(मतलब यह कि आखिरी साँस पूरी हुई कि मौत उसी पल जीव को खींच ले जायगी।)

देखु फरीदा जु थीआ दाड़ी होई भूर।
अगहु नेड़ा आइआ पिछा रहिआ दूर ॥६॥

फ़रीद, देख तो ज़रा, यह क्या हुआ—तेरी दाढ़ी सफेद हो गई; आगा तेरा नज़दीक है, और पीछा दूर छूट गया।

देखु फरीदा जु थीआ शकर होई विसु।
साईं बाझहु आपणे वेदणु कहीऐ किसु ॥७॥

फ़रीद, देख तो ज़रा यह क्या हुआ—शकर भी विष हो गई।

अपने स्वामी को छोड़ अब मैं और किसे अपना दुखड़ा सुनाऊँ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

फरीदा कालीं जिन्ही न राविआ धउली रावै कोइ ।
करि साईं सिउ पिरहड़ी रंगु नवेला होइ ॥८॥

क्या किसी नारी ने, जब उसके केश काले थे, स्वामी के साथ रमण न कर, तब रमण किया, जबकि उसके केश पककर श्वेत हो गये ?

खैर, साईं से तू अब भी प्रीत जोड़ले, जिससे कि तेरे केशों का रंग फिर से नया हो जाय ।

('रंगन वेला' भी एक पाठ है–जिसका अर्थ यह हुआ कि यही स्वामी के साथ रंग खेलने का याने प्रेम करने का समय है ।)

फरीदा जिन्ह लोइण जगु मोहिआ से लोइण मै डिठु ।
काजल रेख न सहदिआ से पंखी सूइ बहिठु ॥९॥

फ़रीद, मैंने उन नयनों को देखा है, जिन्होंने दुनिया को मोह लिया था––

और जो काजल की रेख भी सहन नहीं कर सकते थे, अब चिड़ियाँ उनमें अपने अंडे रख रही हैं ।

फरीदा खाकु न निदीऐ खाकू जेडु न कोइ ।
जीवदिया पैरा तलै मुइआ ऊपरि होइ ॥१०॥

फ़रीद, मत खाक की निंदा कर, खाक के बराबर कोई चीज़ नहीं;

जीते-जी वह हमारे पैरों के तले रहती है, और हमारे मरने पर हमारे ऊपर ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

फरीदा जा लबु त नेहु किया सबु त कूड़ा नेहु ।
किचरु झति लघाईऐ छपरि तुटै मेहु ॥११॥

फ़रीद, जहाँ लोभ है, वहाँ प्रेम कहाँ से होगा ? लोभ होगा, तो प्रेम वहाँ झूठा ही होगा ।

टूटे छप्पर के नीचे मेह में तू आखिर कितने दिन गुजारेगा ?

फरीदा जंगलु जंगलु किआ भवहि वणि कंडा मोड़ेहि ।
वसी रबु हिआलीऐ जंगलु किया ढूढेहि ॥१२॥

फरीद, शाखों और काटों को तोड़ता हुआ एक जंगल से दूसरे जंगल में तू क्यों भटकता फिरता है ?

रब तो तेरे हिये में बस रहा है, फिर जंगल में उसे तू क्यों ढूंढ़ रहा है ?

फरीदा इनी निकी जंघीऐ थल डूगर भविओम्हि ।
अजु फरीदै कूजड़ा सै कोहां थीओमि ॥१३॥

फ़रीद, इन पतली जाँघों और पिंडलियों से कितने ही मैदानों और पहाड़ों को मैंने तय किया ।

पर, आज फ़रीद के लिए अपना कूजा उठाना भी गोया सैकड़ों कोसों की मंजिल तय करना होगया ।

फरीदा राती वडीआं धुखि धुखि ऊठनि पास ।
धिगु तिन्हादा जीविआ जिन्हा बिडाणी आस ॥१४॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

फ़रीद, रातें लंबी हो गईं; पसलियों में हूक उठ रही है। दर्द से करवटें बदलनी पड़ रही हैं।

फरीदा गलीए चिकड़ु दूरि घरु नालि पिआरे नेहु।
चला त भीजै कंबली रहां त तुटै नेहु ॥१५॥

फ़रीद, गलियों में कीचड़-ही-कीचड़ है; और प्यारे का घर, जिससे कि मैंने प्रीति जोड़ी है, दूर है;

अगर मैं उसके पास जाऊँ तो मेरी कंबली भींग जायगी, और मैं अपने घर रहूँ तो मेरी प्रीति टूट जायगी।

भिजउ लिजउ कंबली अलह वासहु मेहु।
जाइ मिला तिन्हा सजणा तुटउ नाही नेहु ॥१६॥

अल्लाह, भले ही तू मेह बरसाये, और मेरी कंबली को भिगो-भिगोकर तर करदे, फिरभी अपने प्यारे साजन से मेरा मिलना होकर ही रहेगा, ताकि हमारी प्रीति न टूटे।

फरीदा मैं भोलावा पगड़ी मत मैली होइ जाइ।
गहिला रूहु न जाणई सिरु भी मिटी खाइ ॥१७॥

फ़रीद, मैं डरता हूँ कि मेरी पगड़ी मिट्टी से मैली न हो जाय; मेरा बावला जी यह नहीं जानता कि पगड़ी तो क्या, मेरे इस सिर को भी यह मिट्टी सड़ा-गलाकर खा जायगी।

फरीद सकर खंडु निवात गुड़ु माखिउ मांझा दुधु।
सभे वसतू मिठीआं रब न पुजनि तुधु ॥१८॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

फ़रीद ! शकर, खांड़, कंद, गुड़ और शहद और भैंस का दूध—ये सभी चीज़ें मीठी हैं, पर अय मेरे रब, उतनी मीठी नहीं, जितना कि मीठा तू है।

फरीद रोटी मेरी काठ की लावणु मेरी भुख।
जिन्हा खाधी चोपड़ी घणै सहनिगे दुख ॥१९॥

मेरी काठ की जैसी तो रोटी है, और लावण (तरकारी या चटनी) है मेरी भूख।

जो घी-चुपड़ी खाते हैं, उन्हें बहुत दुख उठाना पड़ेगा।

आजु न सूती कंत सिउ अंगु मुड़े मुड़ि जाइ।
जाइ पुछहु डोहागणी तुम किउ रैणि बिहाइ ॥२०॥

गई रात को मैं अपने स्वामी के साथ नहीं सोई; मेरा अंग-अंग मरोड़ा ले रहा है।

किसी दोहागिन (परित्यक्ता) से जाकर पूछ कि 'तू रात कैसे काटती है ?'

जोबन जांदे ना डरां जे सह प्रीति न जाइ।
फरीदा किती जोबन प्रीति बिन सूकि गए कुमलाइ ॥२१॥

यौवन के जाने से मैं नहीं डरती, यदि उसके साथ प्रीतम की प्रीति न जाय !

फ़रीद ! कितनी बार बिना प्रीति के यौवन सूख गया, कुम्हला गया !

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

फरीदा ए विसु गंदला धरीश्रां खंडु लिवाड़ि ।
इकि राहेदे रहि गए इकि राधी गए उजाड़ि ॥२२॥

फ़रीद ये (संसारी) सुख खांड़ से चुपड़े विष के अंकुरे हैं ; कुछ तो उनको रोपते हुए ही चल बसे; और कुछ उजड़ गये उन्हें चुनते हुए ।

फरीदा दरि दरवाजै जाइकै किउ डिठो घड़ीश्रालु ।
एहु निदोसां मारीऐ हम दोसा दां किश्रा हाल ॥२३॥

फ़रीद, न्यायालय के दरवाजे पर जब तू गया, तब तूने क्या उस घड़ियाल को नहीं देखा था ?

जब उस बेगुनाह को वहाँ इस तरह पीटा जाता है, तब हम गुनहगारों का क्या हाल होगा ?

घड़ीए घड़ीए मारीए पहरी लहै सजाइ ।
सो हेड़ा घड़ीश्राल जिउ डुखी रैणि बिहाइ ॥२४॥

घड़ी-घड़ी उसपर मार पड़ती, और हर पहर उसे पूरी सजा मिलती है; ऐसे ही, घड़ियाल की तरह, यह देह दरद-भरी रैन काटती है ।

बुढा होश्रा सेख फरीदु कंबणि लगो देह ।
जे सउ वर्हिणा जीवणा भी तन होसी खेह ॥२५॥

शेख फरीद अब बुड्ढा हो गया, और देह उसकी लड़-खड़ाने लगी है । वह यदि सौ बरस भी जीये, तो भी उसकी देह को आखिर खाक में ही मिलना है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

फरीदा बारि पराइऐ बैसणा साई मुझै न देहि ।
जो तू एवै रखसी जीउ सरीरहु लेहि ॥२६॥

साईं, मुझे किसी दूसरे के दरवाज़े पर किसी आस से न बिठाना ; अगर तू ऐसा ही कराना चाहे, तो उससे पहले ही मेरे प्राणों को देह से निकाल लेना ।

फरीदा इकना आटा अगला इनका नाही लोण ।
अगै गए सिञ्ञासपन्हि चोटां खासी कोणु ॥२७॥

फरीद, किसीके पास तो बहुत सारा आटा है, और किसीके पास नमक भी नहीं;

यह तो उन सबके यहां से जाने के बाद ही मालूम हो सकेगा कि सजा किसे मिलेगी ।

पासि दमामे छतु सिरि भेरी सडो रड ।
जाइ सुते जीराण महि थीए अतीमा गड ॥२८॥

जिनके साथ नगाड़े और तुरही बजते थे, जिनके सिर पर राजछत्र रहते थे, और जिनकी विरुदावली चारण गाते थे–

वे कब्रिस्तान में सोने के लिए चले गये, और वहाँ ग़रीब यतीमों की तरह दफना दिये गये ।

फरीदा कोठे मंडप माड़ीआ उसारेदे भी गए ।
कूड़ा सउदा करि गए गोरी आइ पए ॥२९॥

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

फरीद, जिन्होंने मकान, हवेलियाँ और ऊँचे-ऊँचे महल बनवाये थे, वे भी चल दिये;

वे झूठा सौदा करके गये, और कब्र में डाल दिये गये।

फरीदा खिथड़ि मेखा अंगलीआ जिंदु न कोई मेख।
बारी आपो आपणी चले मसाइक सेख ॥३०॥

फरीद, अंगरखे में, टिकाऊ बनाने के लिए, बहुत सारे टाँके लगा दिये हैं, पर ज़िंदगी में ऐसा कोई टाँका नहीं लगा हुआ है।

(मतलब यह कि ऐसी कोई चीज नहीं, जो शरीर के पिंजड़े में से प्राण-पक्षियों को उड़ जाने से रोक सके।)

शेख और उनके शागिर्द, जब जिसकी बारी आई, सभी चल दिये।

फरीदा कंनि मुसला सूफु गलि दिलि काती गुड़ु बाति।
बाहरि दिसै चानणा दिलि अंधिआरी राति ॥३१॥

फरीद, वे कंधे पर मुसल्ला रखते हैं, सूफी की क़फ़नी पहनते हैं, और मीठी-मीठी बात करते हैं, पर दिलों में रखते हैं वे छुरी;

बाहर तो वे चाँदनी फैलाते रहते हैं, मगर दिलों में काली अँधेरी रात झुक रही है।

फरीदा रती रतु न निकलै जे तन चीरै कोइ।
जो तन रते रब सिउं तिन तन रतु न होइ ॥३२॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

फरीद कहता है—अगर कोई मेरे इस शरीर को चीरे, तो इसमें से रत्तीभर भी रक्त नहीं निकलेगा ;

जो शरीर रब के रंग में रँगा गया है, उसमें रक्त नहीं रहता।

फरीदा कोठे मंडप माड़ीआ एतु न लाए चित्तु।
मिटी पई अतोवली कोई न होसी मित्तु ॥३३॥

फरीद, इन मकानों, हवेलियों और ऊँचे-ऊँचे महलों में मत लगा अपने मन को ;

जब तेरे ऊपर बिनतोल मिट्टी पड़ेगी, तब वहाँ तेरा कोई भी मीत नहीं होगा।

फरीदा मंडप मालु न लाइ, मरग सताणी चित्त धरिं।
साईं जाइ सम्हालि, जिथैं ही तउ वंञणा ॥३४॥

फरीद, हवेलियों और दौलत में अपना दिल न लगा; तू तो क़ब्र का ध्यान कर—याद कर उस जगह को, जहाँ तुझे जाना ही होगा।

फरीदा काले मैडे कपड़े काला मैडा वेसु।
गुनही भरिआ मै फिरा लोक कहै दरवेसु ॥३५॥

फरीद, काले मेरे कपड़े हैं और काला ही मेरा भेष है, मैं तो फिर रहा हूँ गुनाहों से भरा हुआ, और लोग कहते हैं मुझे दरवेश !

जां कुआरी तां चाउ वीवाही तां मामले।
फरीदा एहो पछोताउ पति कुमारी ना थीऐं ॥३६॥

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmanc

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

जबतक यह कुंवारी है, तभीतक उसमें उछाह है; ब्याह होते ही आफतों में पड़ जायगी।

फरीद, उसे पछताव है कि वह फिर से कुंवारी नहीं हो सकती।

(विवाह-बन्धन से तात्पर्य है मायाकृत बंधन से; 'कुंवारी' से आशय शुद्ध आत्मा से है।)

चलि चलि गईआं पंखिआ जिनो वसाये तल।
फरीदा सरु भरिआ भी चलसी थके कवल इकल ॥३७॥

वे सब पक्षी, जिनसे कि तालाब आबाद था, उड़ गये; फरीद, यह भरा तालाब भी रहने का नहीं, अकेले कमल ही रहेंगे। (पक्षी = राजे-महाराजे और उच्च पदाधिकारी। तालाब = संसार। कमल = संतजन।)

फरीदा ईंट सिराणे भुइ सवण कीड़ा लड़िओ मासि।
केतड़िआ जुग वापरे इकतु पइआ पासि ॥३८॥

फरीद, ईंटें तो होंगी तेरा तकिया, और तू सोयेगा जमीन के नीचे; कीड़े तेरे मांस को खायेंगे;

एक ही करवट पड़े-पड़े कितने जुग बीत जायंगे तेरे!

उठु फरीदा उजू साजि सुबह निवाज गुजारि।
जो सिरु साईं ना निवै सो सिरु कपि उतारि ॥३९॥

उठ सवेरे, फरीद, वजू कर और नमाज पढ़;

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

काटकर फेंकदे उस सर को, जो मालिक के आगे नहीं झुकता ।

जो सिरु साईं ना निवै सो सिरु कीजै कांइ ।
कुंने हेठि जलाईऐ बालण संदै थाइ ॥४०॥

उस सर को लेकर करेगा क्या, जो रब के आगे नहीं झुकता ? ईंधन की बजाय जलादे उसे घड़े के नीचे ।

फरीदा किथै तैडे मा पिआ जिन्ही तू जणिओहि ।
तै पासहु ओइ लदि गए तू अजै न पतीणोहि ॥४१॥

फरीद, कहाँ हैं तेरे माँ-बाप, जिन्होंने कि तुझे जनम दिया था ? तेरे पास से वे चले गये; आजभी तुझे विश्वास नहीं होता कि दुनिया यह नापायदार है ?

फरीदा मै जानिआ दुखु मुझकू दुखु सबाइऐ जगि ।
ऊचे चड़िकै देखिआ तां घरि घरि एहा अगि ॥४२॥

फरीद, मैं समझता था कि दुख मुझे ही है, मगर दुख तो सारी ही दुनिया को है;

जब ऊँचे चढ़कर देखा, तब मैंने पाया कि यह आग तो हर घर में लग रही है ।

कागा करंग ढढोलिआ सगल खाइआ मासु ।
ए दुइ नैना मति छुहउ पिर देखन की आसु ॥४३॥

कौवो ! तुमने मेरी ठठरी का खोज-खोजकर सारा मांस भख डाला; पर उन दो नयनों को चोंच न लगाना, क्योंकि

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

). In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

मुझे अबभी अपने प्रीतम को देखने की आस है।

फरीदा गोर निमाणी सडुकरे निघरिआ घरि आउ।
सरपर मैथै आवणा मरणहु न डरिआहु ॥४४॥

फरीद, निगोड़ी कब्र बुला रही है, 'अय बेघरवालो, इस घर में बसो।

'मेरे यहाँ तो तुम्हें आना ही होगा; मत डरो मौत से।'

इन्ही लोइणी देखिदिआ केती चलि गई।
फरीदा लोकां आपो आपणी मै आपणी पई ॥४५॥

मेरी इन्हीं आँखों के आगे कितने यहाँ से चले गये!

फरीद, लोग अब अपनी-अपनी फिक्र में हैं, और मैं अपनी फिक्र में हूँ।

कंधी उतै रूखड़ा किचरकु बंन्है धीरु।
फरीदा कचै भांड़ै रखीऐ किचरु ताई नीरु ॥४६॥

तट पर के वृक्ष कबतक अपना ठौर बनाये रहेंगे?

फरीद, कच्चे घड़े में तू पानी रखेगा तो वह कबतक उसमें ठहर सकेगा?

फरीदा दरीआवै कंनै बगुला बैठा केल करै।
केल करेदे हंझ नो अचिंते बाज पए॥
बाज पए तिसु रब दे केलां विसरीआं।
जो मनि चिति न चेते सनि सो गाली रब कीआं ॥४७॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

फरीद, नदी के तीर बगुला बैठा हुआ कलोल कर रहा है; उसके कलोल करते समय बाज अचानक उसपर आ झपटता है; रब का भेजा बाज उसपर झपटता है, वह अपना सारा केल-कलोल भूल जाता है ।

रब ऐसी-ऐसी चीज कर बैठता है, जिसका मन में कभी खयाल भी नहीं आता ।

फरीदा हउ बलिहारी तिन्ह पंखिआ जंगलि जिना वासु ।
कंकरु चुगति थलि वसनि रब न छोड़न्हि पासु ॥४८॥

फरीद, बलिहारी उन पक्षियों पर, जो जंगल में रहते है, फल खाते हैं, जमीन पर सोते हैं, और रब का आसरा नहीं छोड़ते ।

फरीदा तिना मुख डरावणे जिना विसारिओनु नाउ ।
ऐथै दुख घणेरिआ आगै ठउरु न ठाउ ॥४६॥

फरीद, भयावने हैं उनके चेहरे, जिन्होंने उस मालिक का नाम भुला दिया; यहां तो उन्हें भारी दुख है ही, आगे भी उनके लिए कोई ठौर-ठिकाना नहीं ।

फरीदा पिछल राति न जागिओहि जीवदड़ो मुइओहि ।
जेनै रबु विसारिआ त रबि न विसारिओहि ॥५०॥

फरीद, अगर तू रात के पिछले पहर नहीं जागता, तो तू जिंदा भी मरा हुआ है । तू रब को भुला भी दे, पर रब तुझे भूलने का नहीं ।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

ढूढेदीए सुहाग कू तउ तनि काई कोर।
जिन्हा नाउ सुहागणी तिना झाक न होर ॥५१॥

तू अपने सुहाग को, अपने प्रीतम को खोज रही है, तो तेरे अंदर जरूर कोई-न-कोई कमी है;

जिसे सुहागिन कहते हैं वह किसी और की तरफ झाँकती भी नहीं।

तनु तपै तनूर जिउ बालणु हड बलंन्हि।
पैरी धकां सिर जुलां जे मूं पिरी मिलंन्हि ॥५२॥

शरीर मेरा तंदूर की तरह तप रहा है, मेरी हड्डियाँ ईंधन की तरह जल रही हैं;

मेरे पैर अगर थक जायं, तोभी मैं अपने प्रीतम से मिलने सिर के बल चलकर जाऊँगी।

सरवर पंखी हेकड़ो फाहीवाल पचास।
इहु तनु लहरी गडु थिआ सचे तेरी आस ॥५३॥

तालाब में पक्षी तो अकेला एक है, और फँसाने के जाल हैं पचास; यह शरीर लहरों में डूब रहा है; अय सच्चे मालिक, मुझे अब एक तेरी ही आशा है।

(पक्षी=जीवात्मा, जाल=सांसारिक प्रलोभन।)

कवणु सु अखरु कवणु गुणु कवणु सु मणीआ मंतु।
कवणु सु वेसो हउ करी जितु वसि आवै कंतु ॥५४॥

वह कौन-सा शब्द है, वह कौन-सा गुण है, वह कौन-सा अनमोल मंत्र है;

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

मैं कौन-सा भेष धारूं, जिससे कि मैं अपने स्वामी को बस में करलूं ?

निवणु सु अखरु खवणु गुणु जिहवा मणीआ मंतु ।
एत्रै भैणे वैस करि ता वसि आवी कंतु ।।५५।।

दीनता वह शब्द है, धीरज वह गुण है, शील वह अनमोल मंत्र है; तू इसी भेष को धारण कर, बहिन, तेरा स्वामी तेरे बस में हो जायगा ।

मति होदी होइ इआणा, ताण होदे होइ निताणा ।
अणहोदे आपु वंडाए, कोई ऐसा भगतु सदाए ।।५६।।

प्रभु के ऐसे बिरले ही भक्त हैं—

जो, बुद्धिमान होते हुए भी, सरल हैं ;

जो, बलवान होते हुए भी, निर्बल हैं,

और, जो अकिंचन होते हुए भी, अपना सर्वस्व दे डालते हैं ।

इक फिका ना गालाइ सभना मै सचा धणी ।
हिआउ न कैही ठाहि माणिक सभ अमोलवै ।।५७।।

एक भी अप्रिय बात मुंह से न निकाल, क्योंकि सच्चा मालिक हर प्राणी के अंदर मौजूद है ।

किसीके दिल को तू मत दुखा; हर दिल एक अनमोल रतन है ।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

सभना मन माणिक ठाहणु मूलि म चांगवा ।
जे तउ पिरी आसिक हिग्राउ न ठाहे कहीदा ॥५८॥

हर दिल एक रतन है; उसे दुखाना किसीभी तरह अच्छा नहीं । अगर तू प्रीतम का आशिक है, तो किसी-के भी दिल को न सता ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

'मंडल' से प्राप्य संत-साहित्य

१. संत-सुधा-सार	सं० वियोगी हरि
२. संत-वाणी	"
३. जपुजी	"
४. बुद्ध-वाणी	"
५. अयोध्याकांड	"
६. तामिल वेद	ऋषि तिरुवल्लुवर
७. बुद्ध और बौद्ध साधक	भरतसिंह उपाध्याय
८. थेरी-गाथाएं	"
९. गौतम बुद्ध	"
१०. परमहंस की कथाएं	सं० महाबीरप्रसाद पोद्दार
११. रामतीर्थ-संदेश (तीन भाग)	
१२. एक सत्यवीर की कथा	गांधीजी
१३. कबीर के बोल	अशोक
१४. तुलसी-मानस-मोती	अशोक
१५. चैतन्य महाप्रभु	देवराज 'दिनेश'
१६. दादू की वाणी	शशिकला
१७. नज़ीर की नज़्में	शिवनाथसिंह शांडिल्य
१८. तिरुवल्लुवर	पूर्ण सोमसुंदरम्
१९. नरसी महेता	मोहनलाल भट्ट
२०. संत तुकाराम	श्रीपाद जोशी
२१. संत ज्ञानेश्वर	श्रीपाद जोशी

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmanc

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

२२. समर्थ रामदास	श्री पाद जोशी
२३. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती	चंद्रगुप्त वार्ष्णेय
२४. रामकृष्ण परमहंस	विष्णुदत्त 'विकल'
२५. मीरा के पद	बलवंतसिंह मेहता
२६. तीर्थंकर महावीर	यशपाल जैन
२७. गुरु नानक	सोहनसिंह
२८. भर्तृहरि	जयकृष्ण चौधरी
२९. हमारे मुस्लिम संत	आदर्श कुमारी

तुलसी-राम-कथा-माला

रामायण के आधार पर राम-कथा। चित्रोंसहित भावपूर्ण कथाएं। सभी पुस्तकों के लेखक हैं श्री विश्वंभरसहाय 'प्रेमी'। मूल्य प्रत्येक का ३७ नये पैसे।

१. रामजन्म	२. धनुष-यज्ञ
३. राम-विवाह	४. राम-वन-गमन
५. भरत-भेंट	६. पंचवटी में
७. सीताहरण	८. सुग्रीव से मित्रता
९. सीता की खोज	१०. लंकादहन
११. रामदूत अंगद	१२. लक्ष्मण-शक्ति
१३. लंका-विजय	१४. राजतिलक

lepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:
epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

१२

वियोगी हरिजी की अन्य पुस्तकें

१. संत सु[illegible]
२. बुद्ध-वाणी
३. श्रद्धाकरण
४. पावभर आटा
५. मेरा जीवनप्रवाह
६. प्रार्थना
७. संतवाणी

पैंतीस

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman